Krishna Nand B.A III Hai's (1)

के अलावे अन्य वाहिरंग चारों पर शोधार्थी का नियंत्रण नहीं रह पाता है। फलत: निष्कर्ष प्रभावित होने की प्रबल संभावना सदैव बनी रहती है।

(b) स्वाभाविक परिस्थिति उत्पन्न करना शोधार्थी या शोधकर्ता के वश में नहीं रहता है। उसे तब तक इंतजार करना पड़ता है जब तक की अध्ययन की जाने वाली घटना स्वाभाविक रूप से घटित न हो जाय। माना कि खेल के मैदान में बच्चों के आक्रामक व्यवहार एवं नेतृत्व क्षमता के बीच संबंधों का अध्ययन अभिप्रेत है, तो प्रेक्षक या शोधार्थी को तब तक इंतजार करना पड़ता है जब तक की कि बच्चे स्वाभाविक तौर पर खेलना प्रारंभ न कर दें। अत: इसमें समय एवं श्रम अधिक लगाना पड़ता है।

(ii) प्रयोगशाला प्रेक्षण (Laboratory observation)

स्वाभाविक प्रेक्षण के दोषों से मुक्ति पाने के लिए प्रयोगशाला प्रेक्षण की विधि को आजकल काम में लाया जाने लगा है जिससे शोधकार्य में समय एवं श्रम को अधिक से अधिक बचाया जा सके।

प्रयोगशाला प्रेक्षण में शोधकर्ता परिस्थितियों पर मनोनुकूल नियंत्रण रख पाने में सक्षम हो जाता है।

Krishna Nand BA III Hons (2)

साथ ही साथ आवश्यकतानुसार परिस्थिति में फेर-बदल कर सकने में भी सक्षम रहता है। अर्थात प्रेक्षक घटनाओं का प्रेक्षण या निरीक्षण नियंत्रित अवस्था में करता है।

प्रयोगशाला प्रेक्षण का एक प्रमुख दोष यह है कि प्रेक्षक या शोधकर्ता चरों में जोड़-तोड़ करने के लिए स्वतंत्र नहीं होते हैं। क्योंकि प्रेक्षक को यह कामना होती है कि अधिक-से-अधिक स्वाभाविक स्थिति पैदा करने का हर संभव प्रयास करें अन्यथा निष्कर्ष प्रभावित होने की संभावना सदैव बनी रहती है।

(ii) <u>सहसंबंधात्मक शोध</u> (Correlational research) मनोविज्ञान में सहसंबंधात्मक शोध का महत्वपूर्ण स्थान है। मनोविज्ञान के अनेक क्षेत्रों में सहसंबंधात्मक शोध का प्रचलन है। गिलफोर्ड (Guilford, 1965) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि "सहसंबंधात्मक शोध में शोधार्थी चरों को जोड़-तोड़ न करके चयन प्रक्रिया द्वारा करता है और फिर वह एक स्वाभाविक परिस्थिति में अध्ययन करता है कि कहाँ तक एक चर में किया गया है और दूसरे चर में हेर-फेर से संबंधित है। उदाहरणार्थ- माना कि एक शोधार्थी बच्चों में समस्या समाधान क्षमता तथा बुद्धि में संबंध का अध्ययन करना चाहता है।

Krishna Nand B.A III Hals (5)

इस समस्या में दोनों चरों अर्थात बुद्धि एवं समस्या समाधान क्षमता में किए गए फेर बदल का एक दूसरे पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है और उनके बीच के संबंधों के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

उदाहरणार्थ - चयन प्रक्रिया द्वारा दो या दो से अधिक बुद्धि स्तरों वाले समूह का गठन किसी बुद्धि मापनी से बुद्धि लब्धि प्राप्त कर की गई। अब सभी चयनित समूहों का समस्या समाधान क्षमता ज्ञात किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिक बुद्धि स्तर वाले चयनित समूह द्वारा अपेक्षाकृत अधिक कठिन समस्याओं का समाधान किया गया। अतः निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि बुद्धि स्तर एवं समस्या समाधान में धनात्मक सहसंबंध है।

दोष :- (i) सहसंबंधात्मक शोध (correlational research) का एक प्रमुख दोष यह है कि सभी चरों पर नियंत्रण कर पाना संभव नहीं होता है। जैसे - समान बुद्धि स्तर के चयनित समूह के सभी सदस्यों की आयु एक समान हो। ऐसी परिस्थिति में परिणाम प्रभावित होने की संभावना सदैव बनी रहती है।

(ii) सहसंबंधात्मक शोध में कारण - परिणाम